RAJBIL26868/2016/1284525

6 वर्ष 8 अंक

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद, देश व प्रदेश की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

Jaivardhan News

हिन्दी मासिक पत्रिका

जनवरी 2025

पेज संख्या : 28

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

प्रवेश प्रारम्भ

RKCL
का अधिकृत ज्ञान केन्द्र

Tally, DTP,
PGDCA

सन शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी

पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा मो. 9649813798

फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

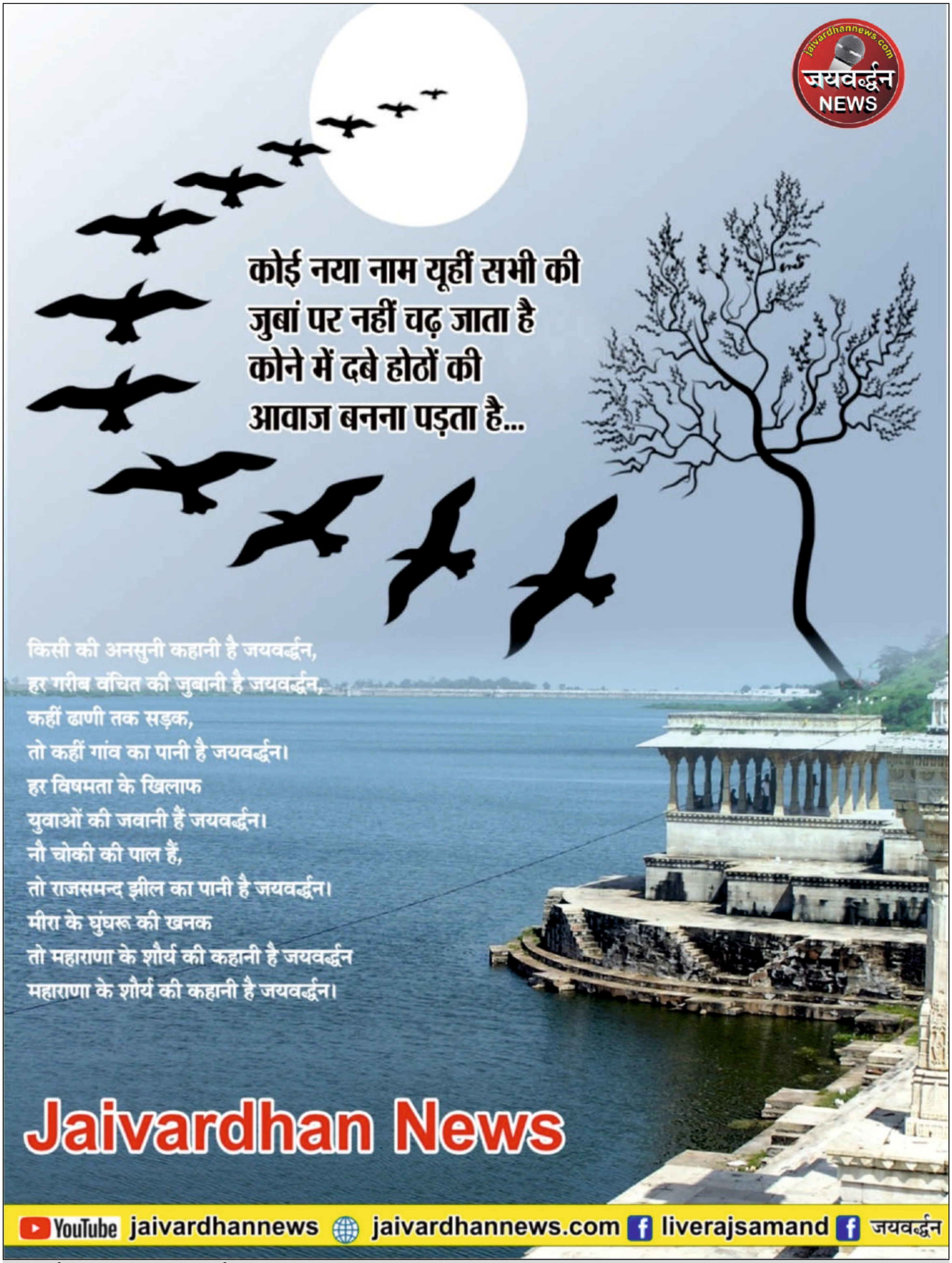
जयवर्द्धन NEWS
jaivardhannews.com
कोई नया नाम यूहीं सभी की
जुबां पर नहीं चढ़ जाता है
कोने में दबे होठों की
आवाज बनना पड़ता है...
किसी की अनसुनी कहानी है जयवर्द्धन,
हर गरीब वंचित की जुबानी है जयवर्द्धन,
कहीं ढाणी तक सड़क,
तो कहीं गांव का पानी है जयवर्द्धन।
हर विषमता के खिलाफ
युवाओं की जवानी हैं जयवर्द्धन।
नौ चोकी की पाल हैं,
तो राजसमन्द झील का पानी है जयवर्द्धन।
मीरा के घुंघरू की खनक
तो महाराणा के शौर्य की कहानी है जयवर्द्धन
महाराणा के शौर्य की कहानी है जयवर्द्धन।
Jaivardhan News
YouTube jaivardhannews
jaivardhannews.com
liverajsamand
जयवर्द्धन

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाश
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
लक्ष्मणसिंह राठौड़

वितरण विभाग
सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स,
द्वितीय मंजिल, सौ फीट रोड, राजसमंद
मो. 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशंचद आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद व आभारी है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 9672980901

सम्पादकीय

गणतंत्र दिवस की सार्थकता

गणतंत्र दिवस की सार्थकताहर वर्ष 26 जनवरी को भारत में गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह केवल एक तिथि भर नहीं है, बल्कि हमारे राष्ट्र के गौरव और लोकतंत्र की पहचान का प्रतीक है। 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ, जिसने भारत को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया। यह दिवस हमें न केवल स्वतंत्रता संग्राम की याद दिलाता है, बल्कि यह भी सिखाता है कि कैसे एक राष्ट्र ने अपनी विविधता में एकता का आदर्श प्रस्तुत किया। गणतंत्र दिवस हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों और संवैधानिक व्यवस्थाओं का उत्सव है। संविधान, जिसे डॉ. भीमराव अंबेडकर और उनके सहकर्मियों ने तैयार किया, हमारे अधिकारों और कर्तव्यों का आधार है। यह दिवस हमें यह एहसास कराता है कि भारत की सफलता और स्थायित्व का कारण उसकी लोकतांत्रिक व्यवस्था है। प्रत्येक नागरिक को समानता, स्वतंत्रता और न्याय का अधिकार प्रदान करना इसी संविधान का उद्देश्य है। भारत विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और धर्मों का संगम है। गणतंत्र दिवस पर परेड के माध्यम से यह विविधता सामने आती है। राजपथ पर झांकियां भारत के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की सांस्कृतिक धरोहर को प्रस्तुत करती हैं। यह न केवल हमारे सांस्कृतिक गर्व को बढ़ावा देता है, बल्कि एकजुटता और सह-अस्तित्व का संदेश भी देता है। गणतंत्र दिवस केवल इतिहास का अध्याय नहीं है, बल्कि यह युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है। यह दिवस हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि स्वतंत्रता सेनानियों और संविधान निर्माताओं ने कितनी कठिनाईयों का सामना किया और देश के भविष्य के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिया। आज का युवा वर्ग अपने अधिकारों को समझे और संविधान द्वारा निर्धारित कर्तव्यों का पालन करे, तो यह दिवस और भी सार्थक बन जाएगा। गणतंत्र दिवस केवल तिरंगा फहराने या परेड देखने तक सीमित नहीं है। यह हमारे अतीत की यात्रा, वर्तमान की चुनौतियों और भविष्य की आशाओं का संगम है। यह दिवस हर भारतीय को गर्व और प्रेरणा से भर देता है और हमें यह संकल्प लेने का अवसर प्रदान करता है कि हम अपने देश को प्रगति के पथ पर ले जाने में अपना योगदान देंगे। गणतंत्र दिवस की असली सार्थकता इसी में है कि हम अपने देश की अखंडता, एकता और स्वतंत्रता की रक्षा करें।

ललिता राठौड़
संपादक जयवर्द्धन
राजसमंद

देश और समाज दिशाहीन

दुश्मन हैं सभी प्यार के, कोई यार नहीं है, ये सच है। कोई झूठा इश्तिहार नहीं है, संसद से सड़क तक हंगामा यही है, कागज़ी जंग से बढ़कर कोई कारोबार नहीं है। हर शख़्स समझता है, सच कहता है, बस वो उससे बढ़कर कोई दुनिया में समझदार नहीं है। सरकार ये कहती है सभी को साथ लेकर चलते हैं, लेकिन हर घड़ी जनाब रंग बदलते हैं, किरदार नहीं, जैसे पोशाक बदलते हैं, मतभेद रहते तो कोई बात नहीं थी, अब होता है आपसी संवाद से मनभेद ही बढ़ते हैं। कुचलने से कभी आवाम के अंदाज़ बदलते हैं, हवाओं के बुझाने से नहीं चराग़ बुझा करते, कुछ बनके शमां महफ़िल में दिन रात जला करते हैं। जिनको दावा है विरासत का, अपनी संभालते हैं, क्या थी इस देश की संस्कृति परंपरा, कभी समझते हैं। जाने किस झूठे अहंकार में डूबे हुए हैं तमाम लोग, आजकल खुद को सभी भगवान समझते हैं, नादान हैं लोग आपकी नादानी पे हंसते हैं। अजब तौर है हर कोई सभी को छोटा और खोटा साबित करना चाहते हैं, किसी को बड़ा होना नहीं आता है, बड़े कभी अपनी बढ़ाई नहीं करते हैं। ठोकर लगाना, गिराना कोई शान की बात नहीं होती है। धरती माता बच्चों की इस बात पर ख़ामोश रहकर दर्द सहती है। भूल हुई माफ़ करना कहना छोड़ दिया है। शराफ़त से दामन छुड़ा इंसानियत से मुंह मोड़ लिया है। भरतीयता की पहचान रही है सभी को अपनाने, गैर को भी गले लगाने की, हर हाल में मर्यादा निभाने की, लेकिन जाने कैसे हमने सब अच्छी बातों को भुला दिया है, कभी कहते थे, जिसे सभी सारे जहां से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा, उसको अजब तमाशा बना दिया है। सुनहरे अतीत को बिसरा दिया है, झूठे सपनों का जाल बुनकर समाज, देश, धर्म, सरकार सभी को उलझा दिया है।

'हिन्दोस्तां हमारा' क्या था, कैसा था, देखने, समझने, जानने को शायर जाँनिसार अख़्तर की पहली बार 1973 में हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट मुंबई से प्रकाशित हुई दो खंड में 1000 पन्नों की अनुपम इक कीमती दस्तावेज़ रुपी किताब, जिसे पचास साल बाद राजकमल प्रकाशन ने 2023 में दोबारा प्रकाशित किया, को पढ़ना ही नहीं भीतर तक झांकना होगा। पहले जाँनिसार अख़्तर जी को लेकर जानकारी देना उचित होगा। हैरानी ही होती है कि मुंबई की फ़िल्मी मायानगरी में जिसको निराशा और नाकामी की ठोकरें लगाई, वो शख़्स तब भी अपनी खुद की परेशानियों की नहीं, बल्कि अपने देश की अनगिनत विशेषताओं को लेकर गहन शोध कर सदियों के शायरों, कवियों से अन्य महान व्यक्तियों को लेकर इक शानदार संकलन का सृजन करता रहा। यहां इक बात कहना ज़रूरी है कि आजकल जब किसी को काबिलियत का उचित परिणाम नहीं मिलता, तब वो देश, समाज को दोष देने का कार्य करता है, लेकिन लेखक ने सबसे महत्वपूर्ण देश की इक वास्तविक शानदार तस्वीर बनाने में अपना योगदान देना ज़रूरी समझा, ताकि आने वाली पीढ़ियां जान सकें। अपने देश, समाज और साहित्य का गौरवशाली इतिहास क्या था। आगे सिर्फ विषय की सूचि दी गई है, जिसकी अभी आपने शायद कल्पना भी नहीं की होगी कि क्या कमाल का देश समाज रहा है अपना।

'हिन्दोस्तां हमारा' किताब का पहला खंड में चंद नज़्में हैं, जो हमारे देश की विशेषता और महानता को उजागर करती हैं। यह बात भी कम महत्वपूर्ण नहीं है कि जहां मुसलमान शाइरों ने हिन्दुओं के त्यौहार होली, दिवाली, वसंत पर रचनाएं लिखी, वहीं और सिख शाइरों ने इस्लामी त्योहारों पर नज़्मे लिखीं। ऐसा उसी मिलीजुली सभ्यता का चमत्कार था, जो हर धर्म, मज़हब को प्यारी थी। पुस्तक में विविधता की कोई सीमा नहीं है, सभी कुछ समाहित किया गया है, प्राकृतिक दृश्य , सुबह शाम, मौसम शहरों, इमारतों, नृत्य, संगीत, चित्रकला, अवतारों,

पैगंबरों, धार्मिक, नेताओं, भारतीयता में रची बसी धार्मिक कथाओं से अन्दाज़े - इश्क़ तक। देखते हैं क्या क्या अध्याय हैं दोनों खंड में और कितना कुछ शामिल है- (1) हिन्दोस्तां की अज़मत (2) हमारे कुदरती मनाज़िर (3) हमारे सुबह- शाम (4) हमारे मौसम (5) हमारे त्यौहार (6) हमारे शहर और इलाके (7) हमारी तामीरात (8) हमारी ललित कलाएं (9) हमारे धार्मिक नेता (10) हमारी कहानियां (11) हमारा अंदाज़े - इश्क़।

ये सभी कविता, ग़ज़ल, नज़्म के स्वरूप में ही नहीं हैं, बल्कि हमारे महान कवियों, शायरों के कलाम हैं। अर्थात आपको सदियों का अदब का सफर भी मालूम होता है, ऐसा कोई शायर नहीं होगा, जिसकी रचना आपको नहीं मिले। दूसरा खंड इतिहास और राजनीति से लेकर सामाजिक परिवेश से आंदोलनों की सही तस्वीर दर्शाता है- (1) सन 1857 से पहले (2) जंगे आज़ादी (3) एहसासे - गुलामी (4) अंग्रेजी दुश्मनी का जज़्बा (5) सन 1921 से 1935 की राजनीति (6) सन 1935 से 1946 की राजनीति (7) आज़ादी का ऐलान (8) आज़ादी की रजत जयंती।

इस किताब की बातों का ज़िक्र इसलिए किया है, क्योंकि 1973 तक आज़ादी के 25 साल बाद देश में चाहे कितनी परेशानियां और समस्याएं रहीं हों, तब भी शिक्षित, विद्वान और बुद्धिजीवी लोग इक उज्जवल भविष्य की परिकल्पना देख रहे थे। क्या आज ऐसा है, तमाम आधुनिक विकास और प्रगति के बावजूद भी देश किसी भवन, किसी सड़क, किसी भौतिक वस्तु से नहीं बनता। ये सभी कितना शानदार हो, मगर इंसान और समाज का वास्तविक चरित्र कितना अच्छा है या खराब है, उस पर निर्भर करता है। सही ढंग से आत्मविश्लेषण किया जाए, तो आज हम उससे नीचे खड़े हैं, जहां पचास साल पहले हमारा देश समाज गर्व से खड़ा था। आज ढूंढने पर भी उस तरह के निस्वार्थी शासक और अन्य तमाम लोग नहीं मिलते हैं, बल्कि आजकल हम इक दूजे से तकरार करने और टकराने में व्यस्त रहते हैं, जब भी कहीं भी देख सकते हैं। हीरे-मोती, कीमती जवाहरात खोकर हम कांच के टुकड़े पाकर समझते हैं, बड़ा कमाल करते हैं। अब आगे क्या होगा सोचकर रूह कांपती है। आखिर में आधुनिक दौर का शायर वसीम बरेलवी क्या कहता है पढ़ते हैं।

आंखें मूंद लेने से ख़तरा न जाएगा,
वो देखना पड़ेगा जो देखा न जाएगा।
ये कह के भिड़ गए हैं सभागार के किवाड़,
बोलेगा जो ख़िलाफ़ वो ज़िंदा न जाएगा।
घुटन बढ़ने का खतरा हो तो दर खोला नहीं जाता,
जहां खामोश रहना हो वहां बोला नहीं जाता।
तो फिर कैसे बचेगी साख बाज़ारे मुहब्बत की,
तुझे परखा नहीं जाता मुझे तोला नहीं जाता।
जहां बेकार की बहसों का कारोबार चलता हो,
वहां हर बात को मैयार पर तोला नहीं जाता।

डॉ. लोक सेतिया
वरिष्ठ व्यंग्यकार
एससीएफ, 30 मॉडल टाउन
फतेहाबाद (हरियाणा)
मो. 9416792330, 9992040688

हास्य व्यंग्य

देख रहा है विनोद महंगाई, बेरोज़गारी, नारेबाजी और जुमलेबाजी के बीच 2025 भी आ गया

‘हैप्पी न्यू ईयर भूषण भैया’ भुटकुन के चाय दुकान पर मंकी कैप से मुंह बाहर निकालते हुए विनोद ने भूषण का अभिवादन किया। ‘अलुआ न्यू ईयर... का बिनोद तुम भी सचिव की तरह अंग्रेजी भाषा में बात करने लगे। अरे हम लोगों का नया साल चैत्र में आता है जी,‘ भूषण ने मुंह बनाते हुए जवाब दिया, लेकिन भूषण भैया हमारे उधारी का हिसाब तो आप अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार पांच तारीख को ही करते हैं, कभी एकादशी/ त्रयोदशी वाला हिसाब किताब तो चलता नहीं !‘ चुटकी लेते हुए भुटकुन बीच में बोल पड़ा।

भूषण (भुटकुन को घूरते हुए) ‘इहे बकलोली के कारण फुलेरा में पड़े हुए हो मरदे, नहीं तो चाय वाला कहां से कहां पहुंच रहा है। चलो दुगो कड़क चाय बनाओं फटाफट... जानता है बिनोद, एक समय था नवंबर से फरवरी तक ठंडा का सीजन रहता था। प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग से ठंडा एकाध महीना भी नहीं टिक पाता है। सर्दी ना हुई मानों गठबंधन की सरकार हो गई, टाइम का कोई फिक्स शेड्यूल ही नहीं रहा,‘ खैनी रगड़ते हुए भूषण बोला।

‘भैया हमको तो लगता है कि प्रदूषण के साथ ही रुस-यूक्रेन, इजरायल-हमास, सीरिया-यमन आदि विभिन्न देशों के बीच होने वाले युद्ध के कारण भी ठंड ज्यादा दिन नहीं टिक पाई। चाहे जो बोलिए भैया हमको तो खुब ठंड लगती है। अब देखिए ना कम दिन रहने वाला ठंडा भी हांड़ कंपा दिया और लौटती जाड़ा में हमको कंबल खरीदना पड़ गया। पता है आपको, हम तो पूस में एक दिन भी नहीं नहाएं, लेकिन भैया कुल मिलाकर साल 2024 हम लोगों के लिए ठीक नहीं रहा। विधायक जी पर कुत्ता मारकर खाने का आरोप लग गया तो दूसरी ओर प्रधान पर गोलीबारी भी हो गई। मायूसी के साथ बिनोद ने अपनी बात पूरी की।

‘अरे हमारे गांव के प्रधान की बात तो छोड़ो, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राजनीति करने वालों के लिए भी पिछला साल सही नहीं रहा भाई...। मालूम है दो राज्यों के प्रधान तक को जेल की हवा खानी पड़ गई, जबकि पड़ोसी देश के प्रधान को गद्दी और देश दोनों छोड़कर भागना पड़ा बिनोद। सांत्वना व्यक्त करते हुए भूषण आगे बोला, सच पूछो तो वर्ष 2024 में नारा और घोषणाओं का लोकतांत्रिक मार्केट परवान चढ़ा रहा। नहीं झुकने वाला पुष्पा इस वर्ष के अंत तक राज (पुष्पा 2 द रुल) करने चला आया किन्तु अबकी बार चार सौ पार’ की उम्मीद लगाने वाली राष्ट्रीय पार्टी को भी गठबंधन के सहारे सरकार बनाने की नौबत आ गई। समय-समय पर 'बंटोगे तो कटोगे' और 'एक हैं तो सेफ हैं' भी सुर्खियों में छाया रहा। एगो बात जानता है बिनोद इस साल अखिल भारतीय स्तर पर आईएएस से भी बड़े पद के रुप में उभरने वाला बीपीएससी शिक्षक का पद खुब चर्चित रहा। पंचायत में होने वाले दिखावटी मीटिंग की तरह इस आयोग से चयनित हुए अभ्यर्थियों पर भी दिखावा का शौक चढ़ गया। घर-द्वार, बाईक से चार चक्का गाड़ी तक में शान से ‘बीपीएससी शिक्षक’ का बोर्ड लगा कर स्वयं को श्रेष्ठ साबित करने की होड़ में लगा रहा।

‘एक दम सही कह रहे हैं भैया, बीपीएससी शिक्षक वाला भौकाल तो हम भी सुन रखें हैं। इतना फख्र तो हम फुलेरावासी प्रहलाद भाई के बेटा राहुल के शहीद होने पर महसूस नहीं कर रहे थे, जितना यह कम वेतनमान वाले शिक्षक कर रहे हैं। एक दुल्हा तो शादी के डिस्प्ले बोर्ड में वेलकम की बजाय बीपीएससी शिक्षक लिख कर अपने परिवार और समाज को गौरवान्वित महसूस कराने का प्रयास किया था। ‘भूषण की बातों का समर्थन करते हुए बिनोद बोल पड़ा।’

जानता है बिनोद, पिछले साल मार्च में एक दिन मेटा की सारी सर्विस अचानक बंद हो गई तो मोबाइल उपभोक्ताओं का प्राण हलक में आ गया था। बीच बीच में फर्जी साइबर ठग साइबर अरेस्ट के रूप में कंठ सुखाता रहा। इससे पहले की भूषण अपनी बात पूरी करता बिनोद बीच में ही टपक पड़ा 'यह मेटा कौनसी बला है भैया?'

'अरे वो फेसबुक, व्हाट्सएप्प चलाने वाली कंपनी है मेटा। एक दिन उसकी सेवा ठप पड़ गई थी तो सेवाओं के बंद हो जाने के डर से सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर, रील्स मीम्स यूजर्स खासकर लेखक वर्ग हलकान हो गया था। अरे तुमको कहां से पता चलेगा, तुम कौनसा मोबाइल पर फेसबुक चलाते हो? भूषण ने समझाया।

हे भैया! हम तो साइकिल भी चलाना नहीं जानते, तो यह व्हाट्सएप्प, फेसबुक कहां से चलाएंगे? वैसे भी हमारे पास टिपटिपिया बटन वाला मोबाइल है। आत्मविश्वास के साथ असमर्थता प्रकट करते हुए बिनोद आगे बोला- लेकिन भैया, झटका तो हमें भी पिछले साल उस समय लगा, जब हमारा जियो वाला रिचार्ज प्लान अचानक से महंगा कर दिया गया।

खैनी को होंठ और दांतों के बीच स्थापित करते हुए भूषण बोला - 'जियो से याद आया, तुमको पता है, अनंत और राधिका का वैवाहिक कार्यक्रम को सदी की शादी के रूप में याद रखा जाएगा। मेंहदी, तिलक, प्री वेडिंग सूट, विवाह आदि की रस्में एकता कपूर के सीरियल और एस. राजमौली के सीक्वल मूवी की तरह लंबा चलते हुए आखिर कार संपन्न हो ही गया. अरबों रुपए खर्च हुए हैं इस शादी में... जिस प्रकार देवी-देवताओं के वैवाहिक कार्यक्रम में यक्ष, गंधर्व,देवता आदि उपस्थित हुआ करते थे, उसी तरह नेता, पीएम, सीएम, खिलाड़ी, एक्टर लगभग सभी वीवीआईपी पहुंचे थे इस शादी में। पत्रकारिता की बात कहो या चाटुकारिता की, कुछ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया वाला तो पेटकूनिया डाल कर अंबानी के घर पर ही पड़ा रहता था और सारी कवरेज टीवी पर प्रसारित करता रहता।

बिनोद गर्दन हिलाते हुए 'लोकतंत्र में राजसी विवाह जयसन दृश्य के बारे में सुनें तो हम भी थे भैया. शादी में इतना-इतना ख़र्च किया और उसकी भरपाई के लिए हमारा रिचार्ज प्लान महंगा कर दिया, बताइए-

बिनोद की बातें सुन मुस्कुराते हुए भूषण बोला,
धीरे-धीरे तुम भी समझदार होने लगा है बिनोद।

हें हें हें... सब आपकी संगत का असर है भैया। वैसे भी राजनीति और दुनियादारी तो हमारे समझ से परे है। बिनोद ने तार्किक जवाब दिया। राजनीति से याद आया, अस्पताल के सामने जिस तरह हम लोग और सचिव-प्रधान के टीम के बीच पुष्टांग मारपीट हुआ था, वैसे ही संसद में पक्ष और विपक्षी सांसद के बीच धक्का-मुक्की हुआ है। और तो और पिछले साल ईवीएम की स्थिति और परिस्थिति भी हम लोगों की तरह ही रही। जिस तरह प्रधान पर हुए गोलीबारी के लिए फुलेरा सहित ओटीटी के दर्शक हम पर और विधायक चंद्रकिशोर सिंह पर शक कर रहा है, वैसे ही लोकसभा चुनाव 2024 में ईवीएम मशीन पर संदेह नहीं करने वाली विपक्षी पार्टी विभिन्न प्रांतों के विधानसभा चुनावों में मिले हार पर व्यक्तिगत समीक्षा की बजाय ईवीएम के चरित्र पर उंगली उठाती रही। 'दांत और होंठ के बीच फंसे खैनी को जीभ से बाहर निकालते हुए गम्भीरता से भूषण बोला।

हे भैया! सांसद, विधायक तो हम पंचायत प्रतिनिधियों से भी ज्यादा उत्पात मचाने लगे हैं। सदन के अंदर भी गाली-गलौच तो एक दूसरे पर कभी कुर्सी, कभी जूता फेंक मारते हैं। जाने दीजिए, हमें क्या... हम तो पंचायत में ही खुश हैं, आपस में मन-मुटाव भी है तो साथ हैं। रही बात चुनाव की तो हमारा पंचायत चुनाव ईवीएम की बजाय बैलेट पेपर से ही होने वाला है, चाय सुरकते हुए बिनोद बोला।

बिनोद की बातें सुन भूषण के चेहरे पर रहस्यमयी मुस्कान छा गई। वह चहकते हुए बोला, सही याद दिलाया बिनोद, अब तो 2025 आ गया और हम लोगों को अपने पंचायत चुनाव पर भी फोकस करना है। चलो फटाफट चाय खत्म करके पंचायत वासियों को नववर्ष की शुभकामनाएं देने चलते हैं। नववर्ष के बहाने क्षेत्र में लोगों से मिलना-जुलना भी हो जाएगा और वोट बैंक भी तैयार...। चाहे जैसे हो, इस वर्ष बिट्टू की मम्मी को प्रयाग महाकुंभ और पंचायत महाकुंभ दोनों में डुबकी लगवा कर फुलेरा का प्रधान बनवाना ही है।

थोड़ी देर पहले कैलेंडर नववर्ष की शुभकामनाओं पर आपत्ति व्यक्त करने वाले भूषण द्वारा फुलेरावासी को शुभकामना संदेश ज्ञापित करने की बात सुनकर बिनोद लंबी सांस लेते हुए बोला- 'आप न भैया, अब पक्का पॉलिटिशियन हो गए हैं। इस बार आप प्रधान पति जरूर बनिएगा और हम बनेंगे उप प्रधान। इसके बाद भुटकुन की दुकान पर भूषण और बिनोद के चाय कप से 'सुर्र-सुर्र' की संयुक्त ध्वनि निकलने लगी।

विनोद कुमार 'विक्की'
व्यंग्यकार, बिहार
मो. 7765954969
vinodvicky5382@gmail.com

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

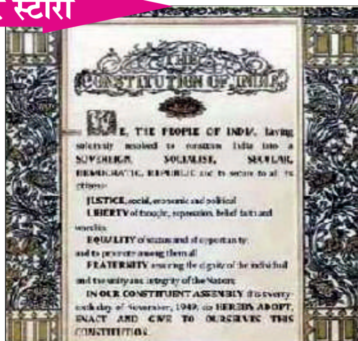

भारतीय लोकतंत्र की आत्मा हमारा संविधान

भारत वर्ष में आजादी के उजास की भोर में सांस लेने के साथ लाल किले पर तिरंगे के आरोहण से शुरू होकर 26 जनवरी 1950 के सर्व प्रभुत्व सम्पन्न हम देशवासियों की मानस यात्रा के ये तीन वर्ष निराशा, भय, संभ्रम और असुरक्षा के जिस दौर से गुजरे होंगे, विभाजित वृहत्तर भारत वर्ष के आजादी प्रिय जन मानस के लिए अब इतिहास के पृष्ठों का विषय हो गए हैं।

आजाद भारत की सौ प्रतिशत खुशी तो निस्संदेह तब मिली होगी, जब हम सर्व प्रभुत्व सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य के नागरिक होने के आनन्दोत्सव में निमग्न हुए होंगे। विभिन्न लोकतंत्र के हामी साठ देशों की विधायी, कार्यकारी और विधि व्यवस्थाओं को सूक्ष्मतः समझने के बाद तैयार भारतीय संविधान मंथन से नवनीत निकालने की प्रक्रिया का परिणाम कहा जा सकता है। यह मौलिक इसलिए है कि इसे संभावित उन समस्याओं के आंकलन और किसी भी लोकतांत्रिक देश की समाजिक समावेशी प्रकृति को आधार बनाकर राष्ट्र सर्वोपरि मानकर रचा गया था। जाति, सम्प्रदाय जैसे केनवासों पर तो इस प्रतिमा को बाद में बदरंग करने की कोशिश की गई है। एक विशाल छतरी के नीचे सभी को धूप धूल धुंए से बचाकर आगे बढ़ने को उदग्र इसके निर्माता को अपनी सीमित सोच के दायरे में सिमटाने का प्रयास करने वालों को 'भारतीय लोकतंत्र की आत्मा' इस संविधान का पुनरपि वाचन करने की महती आवश्यकता है।

राष्ट्रीय स्तर की अपेक्षाओं को संविधान के कलेवर में समेटकर कश्मीर से कन्या कुमारी और असम से राजस्थान के आसपास की दिशाओं तक को ससम्मान समेटने की मनीषा हो, सांस्कृतिक, भौगौलिक और सामाजिक वैविध्य के मध्य अखंड भारत की अंतर्निहित संवेदनाओं और विराट जीवन मूल्य व जीवन शैलियों के इनपुट की बात हो, को संविधान के पृष्ठों पर अंगीकृत करा संविधान निर्माताओं ने इसके विराट स्वरूप को हम देशवासियों के समक्ष रखा था। भारतीय लोकतंत्र की इस आत्मा पर गहन विमर्श होना चाहिए। 'संवैधानिक नैतिकता' के बोध के बिना क्या हम इसे समग्र हित के चश्मे से देख पाएंगे?

हमारा संविधान समाज के सभी वर्गों के समुत्थान की बात तो सोचता ही है, लेकिन अनेक वंचित वर्ग और क्षेत्रों के प्रति न्याय संगत सोच व सकारात्मक संक्रियाओं ने इसे राष्ट्र के सम्यक्, संतुलित और समभावी स्वरूप के भाष्यकार के रूप में प्रतिष्ठित किया है। संघ व राज्य, समान नागरिकता, एक राष्ट्र, मूल अधिकार, नीति निर्देशक तत्व, अनेक विविधता की दृष्टि से अपरिहार्य संघ, राज्य, वर्ग विशेषों के लिए प्रावधानों व इनके संरक्षण, व्याख्या हेतु विधायिका, कार्यपालिका व न्याय प्रणालिका के मध्य अंतर्निर्भरता हमारे संविधान की वे दिशाएं हैं, जो कल्याणकारी राज्य के लक्ष्य

तक ले जाती हैं। यही क्यों, बदलते परिवेश की बदलती प्राथमिकताओं ने सुनिश्चित प्रक्रिया के साथ संशोधन, समाशोधन और विमर्श की जो व्यवस्थाएं दी गई हैं, वे इस लिखित संविधान (केवल विधान नहीं) की काल निरपेक्ष प्रासंगिकता को बनाए रखेंगी, ऐसा विश्वास है।

इन पंक्तियों के लेखक के लिए यह चिन्तन अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि आने वाली भारतवर्ष की जिम्मेदार पीढ़ी के लिए भारतीय संविधान का पठन पाठन किस सीमा तक जाकर जरूरी है। बेशक स्कूली और महाविद्यालयी शिक्षा के पाठ्यक्रम में इसे पढ़ाया जा रहा है, लेकिन मुख्यतः वह सूचनाओं के विद्यार्थियों तक संप्रेषण तक अधिक केन्द्रित है। हम उस दिन की प्रतीक्षा में हैं, जब हमारे शिक्षार्थी उसे भारत की राष्ट्रीय अस्मिता, अखंडता और एकता की समझ के धरातल पर जाकर पढ़ें। यह हमारे 'इमोशनल इन्टेलिजेन्स' की सीख का पाठ हो, यह हमारी राष्ट्रीय भावना के परिष्कार की पाठ्यवस्तु बनाकर पढ़ाया जा, यह उस संवेदना, करुणा, सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय के संस्कार विकास के लिए पढ़ाया जाए, जो वस्तुतः 'सबका साथ सबका विकास' के सीखने सिखाने की क्रियाओं का वाहक हो और जिसे हम भारतीय लोकतंत्र की आत्मा के रूप में प्रसाद रूप ग्रहण कर सकें। ऐसा कौशल विकसित करने वाला हो। सुधी पाठक विचार करें।

डॉ. राकेश तैलंग
पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
श्री द्वारकाधीश मंदिर के पास
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली, राजसमंद
मो. 9460252308

कुंभकर्णीय नींद में कुंभ स्नान?

कुंभ स्नान की अभिलाषा भला किसमें नहीं होगी? व्यवस्था का वैभव, कभी न जाने वाली बिजली विभाग की रोशनी, मुस्तैदी से काम करते नगरपालिका के कभी न काम करने वाले कर्मचारी, चमचमाती साफ-सुथरी सड़कों का जाल, सड़क किनारे लाइन से लगे, खोंमचे और चाय के ठेले। सफाई देख लार टपकने को आतुर हो जाए, दही भल्ले की प्लेट देखो तो जबान कंट्रोल से पुलिस की तरह बेकाबू हो जाए? पानी पतासे का चार तरह का पानी...। वाह-वाह करते-करते वाह वाह की याद आ जाए।

हर कोई तैयार है कुंभ में डुबकी लगाने को। पुलिस मेले की सौगात पाने के लिए, कर्मचारी कमाई के लिए, भक्त पाप धोने को, पत्रकार आकर्षक, मनभावन, मनमोहक चित्रों के साथ कथा लिखने को। सभी तैयार क्यों न हों, 12 साल में एक बार ही तो आता है, जब डंके की चोट, न नहाने वाले नहाने पहुंच जाते हैं। ढोल पीट-पीटकर कहते हैं-जो कुम्भ न नहाए वह महापापी है।

कुम्भ में झम्मन चहकते हुए आगे बढ़ रहे थे। इतनी सुबह उठकर अगर पढ़ाई की होती, कमरे के बाहर कलेक्टर की नेम प्लेट चमक रही होती। खैर कलेक्टर बन भी जाते तो झम्मन ही रहते। कलक्टर होना बड़ी बात है, लेकिन झम्मन होना, उससे भी बड़ी बात है। कलक्टर झम्मन की तरह चौपाटी पर खड़े होकर चाय नहीं पी सकता? किसी सुन्दर नारी को घूर कर नहीं देख सकता, अगर ऊंच नीच हो जाए और भीड़ द्वारा सरपट दौड़ा दिए जाएं, तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि झम्मन कोई कलक्टर थोड़े ही है।

कड़कड़ाती ठंड में ठेले पर उबलती चाय की सुगंध की अनेदेखी झम्मन नहीं कर पाए। कड़क चाय की तरह कड़कड़ाते हुए कड़क्कर कहा- एक ठो चाय पिलवाइएगा। चाय का कुल्हड़ थमाते हुए चाय वाले ने भी कड़क लहजे में कह दिया- कुल्हड़ कूड़ेदान में डालना, ये तुम्हारी दिल्ली का दरीबा नहीं है कि जहां मर्जी हुई ओक (उल्टी) दिए? झम्मन को गुस्सा तो बहुत आया, लेकिन चाय के घूंट के साथ पी गए। जब चाय वाले ने एक कपल्ली चाय के 50 रुपए मांगे तो झम्मन तमतमा गए? अब क्या पूरे कुम्भ मेले का खर्चा हमसे ही लोगे? चाय वाले ने पल्टी मारते हुए विनम्रता से कहा- बाबूजी 10 चाय पिला चुके हैं, व्यवस्था वालों को यह पहली चाय, जिससे बोहनी-बट्टा हुआ है, अभी बड़े साब जी का फौज के साथ आना बाकी है।

खैर... नागा साधुओं से ज्यादा नागा साधु सुन्दरियों की चर्चा से अखबारों में भरी पड़ी थी, एकाध बिचारा आईआईटी पास भी साधु था, उसका इन्टरव्यू लेने में खास परेशानी आ रही थी कि कहीं गलत अंग्रेजी न निकल जाए, सोच-समझकर कैमरे की ओर बार-बार देखकर कहीं गलती नहीं हो रही हो? झिझकते हुए प्रश्न पत्रकार कर रहे थे। जो पत्रकार किसी मंत्री को नहीं छोड़ते वे सहमे नज़र आ रहे थे। एक तो साधु ऊपर से नागा, कहीं उल्टा-सीधा श्राप दे दिया तो सारी पत्रकारिता धरी की धरी रह जाएगी। झम्मन ने दूर दर्शन करना ही उचित समझा, लेकिन नागा सुन्दरी साधु को देखने की मंशा को रोक नहीं पाए। समस्या ये थी कि साधु के चेहर पर सिर्फ भभूत के अलावा कुछ नज़र नहीं आ रहा था। मानो भभूत ही वस्त्र हो।

एक अखबार में एक बार 'अघोरियों के बीच' उपन्यास पढ़ा था। इसलिए झम्मन अघोरियों को देखने पहुंच तो गए, लेकिन कौन अघोरी है कैसे पहचाने? पूछने के लिए 36 इंच का सीना चाहिए, वह भी ठंड में सिकुड़कर 22 इंच का रह गया था। मन मसोसकर व्यवस्था को कोसते हुए आगे बढ़े। शानदार सड़क किनारे कपड़े के तम्बू, फ्लेट और आर्टिफिशियल मकान देख मनवा डोल गया। एक रात यहां भी गुजार लें। बस फिर क्या था, फटाफट दरवाजा फड़फड़ा दिया और कीमत सुनकर भाग खड़े हुए। दस हजार से लेकर एक लाख तक किराया। बस कुम्भ नहाओ और घर की रजाई में मुंह ढंक कर सो जाओ, वही सस्ता सौदा है। बहरहाल रात में दिन की रोशनी का अहसास हो रहा था। सोचा जल्दी-जल्दी तीन डुबकी लगा आऊं और घर की ओर इस चकाचैंध से भाग चलूं। कहीं किसी ने पकड़कर साधु दीक्षा दे दी, तो परिवार का क्या होगा?

रजाई हटाकर जो ठंडे पानी की चार बूंदे मुंह पर पड़ी तो कुम्भकर्णीय नींद में कुम्भ स्नान धरा का धरा रह गया। पत्नी पानी का लोटा लिए खड़ी थी। कुम्भ में स्नान-ध्यान के लिए निद्रा त्याग जरूरी है। कुम्भ स्नान यानी आस्था और त्याग है, कुम्भकर्णीय नींद नहीं?

सुनील जैन 'राही'
व्यंग्यकार, नई दिल्ली
मो. 9810 960 285

गांधी इन ताइवान

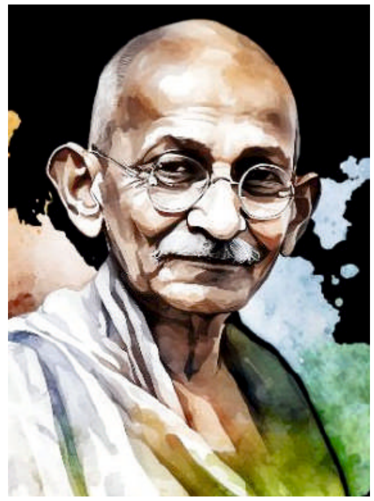

ये तस्वीर ताइपे के च्यांग काई शेक मेमोरियल हॉल मे लगी हुई है। च्यांग काई-शेक ताइवान के पहले प्रेसीडेंट हुए जो 25 साल तक बने रहे। इस तस्वीर को देखकर गर्व बाद में, ताज्जुब पहले हुआ कि भारतीय मुल्क का एक प्रभावी नेता उस देश में है, जिस देश को कितने ही भारतीय नक्शे में भी नहीं जानते। यह मुलाकात कलकत्ता में हुई थी। इस मुलाकात की तस्वीर को संग्रहित कर इसका इस जगह पर होना, कितनी महत्वपूर्ण बात रही होगी। सहकर्मी से पूछने पर पता चला कि उन्हें इंडिया के बार में कुछ ही चीज़े पढ़ाई जाती है, जिसमें से गांधी और उनके विचार भी है।

विचारों में कितनी ताकत है, ये मैं अच्छे से समझता हूं। पर वें इतनी दूरी तय कर लेते हैं, यह वास्तविकता में देखकर हैरानी होती है। मुझे लगता है कि आदमी का मारा जाना इतना बड़ा नहीं, जितना बड़ा उसके विचारों का मारा जाना है। गांधी को गोडसे ने कम, राजनीति ने ज़्यादा मारा है। एक मछली पूरा तालाब गंदा कर सकती है, मगर कुछ अनेक मछलियां मिलकर भी सागर का कुछ नहीं कर सकती। विचार सागर की तरह है। विचार दूषित नहीं होते, ना ही मरा करते हैं। गांधी के सिद्धांत और विचार कोई नई खोज नहीं थी। अहिंसा तब कोई नया विचार नहीं था। विचार दबाए जाते हैं। विचारों को दबाना, मानो सागर पर घर बानाने जैसा है। एक दिन सागर घर को दबा ही लेता है और समय उस विचार को फिर किसी के नाम का साथ देकर वर्तमान को चुनौती देने उठ खड़ा करता है।

ताइवान की किताबों और यहां के लोगों के ज़ेहन में गांधी की रीढ़ की हड्डी अब भी इतनी सीधी है, जैसी अंग्रेज़ों के सामने भारत छोड़ो आंदोलन में सीना ताने खड़ी थी, लेकिन भारतीयों के ज़ेहन में वही रीढ़ की हड्डी झुक चुकी है, जो लाठी लिए अपने सीने को सहारा दिए हुए है। गांधी की रीढ़ कितनी ही झुका दी जाए, इससे गांधी को अब कोई फर्क नहीं पडता। बेहतर है कि इतिहास से सिखा जाए। नफरत खुद पर इतनी हावी ना हो कि अच्छाई सुनते ही विद्रोह पर उतर आए।

रौनक धूपिया
लेखक, काव्य गोष्ठी मंच
कांकरोली हाल ताइवान

विक्की मीडिया का व्यंग्य एकादश

बेरोजगार प्रायः शिक्षित व्यक्ति ही होता है, अशिक्षित नहीं।

पेट्रोल, प्याज, पाकिस्तान और पत्नी का भाव एवं हाव-भाव सर्वाधिक परिवर्तन शील तत्वों की श्रेणी में आता है। गांव का विकास ग्राम प्रधान अथवा मुखिया जी के घर और ठाठ में दिख जाता है। सरकारी नौकरी में घोड़े को गधा बना दिया जाता है और गधों से घोड़े जैसी उम्मीद की जाती है। ईमानदार और उगाही वाले पद पर ना रहने वाला सरकारी सेवक, कार्यो के अतिरिक्त बोझ अथवा विभागीय कार्रवाई के चक्र में उलझा रहता है।

बॉस की नजर में ब्रह्मांड का सबसे कर्मठ जीव वह स्वयं और सबसे निकम्मा और कामचोर जंतु अधीनस्थ कर्मी होता है। संपादकीय उदासीनता अथवा स्वीकृति की प्रतीक्षा में प्रायः अच्छी रचनाएं दम तोड़ देती है, जबकि स्तर हीन रचनाएं भी प्रमुख पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो इठलाती दिख जाती है।

रहन-सहन और जीवन शैली देखकर पहले पारिवारिक स्टेटस का अनुमान लगाया जाता था, अब ऑनलाइन स्टेटस देखकर ही जीवन शैली का अनुमान लग जाता है। ईमानदार, कर्मठ और सजग पुलिसवालों की उत्कृष्ट एवं लुप्तप्राय प्रजाति सिर्फ क्राइम पेट्रोल अथवा सावधान इंडिया के एपिसोड में देखने को मिलती है। अत्यधिक ऊर्जावान और योग्य होने के फायदे कम, किंतु साइड इफेक्ट्स ज्यादा होते हैं।

मनुष्य जहां अपने रिश्तेदारों के मन को समझने में असफल हो रहे हैं, वहीं फेसबुक, एआई तथा गूगल जैसे सर्च इंजन उपभोक्ता के मन को बखूबी समझ रहा है।

विनोद कुमार 'विक्की'
व्यंग्यकार, बिहार

बुद्धिबेचकों का ताण्डव

समाज और देश को बुद्धिजीवियों पर भरोसा था। उनके नीर-क्षीर विवेक पर गर्व था। यह विश्वास था कि इनकी बुद्धि से सबका भला होगा, देश की उन्नति में योगदान दिखेगा, नवनिर्माण और विकास की धाराओं को सम्बल प्राप्त होगा और ऐसा कुछ हो सकेगा कि दुनिया में अपने मुल्क का नाम इनकी वजह से ऊँचा होगा। पर ऐसा हो नहीं पाया, न होना संभव है। कारण साफ है कि जिस बुद्धि के सहारे ये लोग जीवित हैं, जीविकार्जन के लिए जिस प्रकार की बुद्धि का दुरुपयोग कर रहे हैं, अर्जन ही अर्जन की धुन सवार है, समाज के लिए कुछ देने-करने का भाव गायब होता चला जा रहा है, इन स्थितियों में बुद्धिजीवियों की हरकतों और फितूरों ने बुद्धिबल पर ही प्रश्न चिह्न खड़ा कर दिया है।

जिस विद्या के सहारे विनय और पात्राता आने की बातें साकार होती थीं, अब न वो विद्या रही है, न पात्राता आ रही है। बल्कि अब तो जो लोग बुद्धिशाली और बुद्धिबली हो गए हैं वे ज्यादा शातिर, शोषक, चतुर और धूर्त-मक्कार होते जा रहे हैं। हम, हमारे आस-पास और दुनिया वाले जिनसे परेशान हैं वे सारे के सारे बुद्धिजीवी कहे जाते हैं। अपराध, आतंक, लूट-खसोट, चोरी-बेईमानी, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, शोषण और दूसरे सारे मर्यादाहीन धंधों में रमे हुए लोगों में जो कुख्यात हैं उन सभी में अधिकांश वे हैं जो बुद्धि का इस्तेमाल कर रहे हैं चाहे आईटी में माहिर हों या फिर एंटीसोशल इंजीनियरिंग में अथवा जिन्हें माननीय, लोकप्रिय और सर्वज्ञ मानकर अपने वर्तमान और भावी स्वार्थों की पूर्ति की आशा में पूज्य मानकर पिछलग्गू बने हुए हैं।

हालांकि वे लोग भी असंख्य हैं जो अपनी बुद्धि का इस्तेमाल अपने कर्तव्य कर्मों में कर रहे हैं, समाज और देश के लिए जीते हैं और राष्ट्रीय चरित्रा, स्वाभिमान और देश हित के लिए समर्पित हैं और जहाँ जिस क्षेत्रा में काम कर रहे हैं वहाँ सामाजिक और राष्ट्रीय सरोकारों की भावना से आदर्श काम करते हुए गौरव भी प्राप्त कर रहे हैं, और कृतज्ञ समाज एवं देश उन पर गर्व भी करता है, लेकिन बहुत बड़ी संख्या वाले बुद्धिजीवियों की कई जमातें ऐसी भी है, जिनका समाज और देश के उत्थान में तनिक भी योगदान नहीं है, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में इनकी भूमिका हद दर्जे की नकारात्मक, विध्वंसकारी, छिद्रान्वेषी, स्वार्थपूर्ण और विवादों की जननी रही है और इन लोगों का एक ही काम रह गया है, न खुद ढंग से जीना, न औरों को जीने देना। फिर जहां कोई अच्छा काम होता है, समाज की भलाई और देश के उत्थान की भूमिका रची जाती है। समाज और देशहित में परिवर्तन की बात कही जाती है, वहां अपने अनर्गल और बेतुके शब्द पोखरों से विरोध और हुड़दंग मचाने में पीछे नहीं रहते। ये सारे के सारे सड़ियल मानसिकता वाले हुडदंगी अपने वजूद को जैसे-तैसे बनाए रखने के लिए अनाप-शनाप चर्चाओं, बहसों और श्वानी मानसिकता का परिचय देते रहते हैं। इन्हें न सच से कोई सरोकार है, न देश से। इन्हें केवल अपनी खोटी चवन्नियां चलाने का ही भूत सवार है और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वे सारे घृणित और देशविरोधी हरकतों में रमे हुए हैं। ये केवल बोलने के लिए ही बोलते रहने और विरोध के लिए ही विरोध का पागलपन दर्शाने के आदी हो गए हैं जैसे कि दुनिया के बहुत सारे उन्मादी, मंद बुद्धि और पागल लोग बेवजह चिल्लाते रहने को ही जिन्दगी समझते हैं। सारे गंदे काम करते रहें, जो चाहे बकते रहें, जिसे चाह लें उसका इस्तेमाल अपने हक में करते रहें और कहलाए जाते हैं बुद्धिजीवी।

आजादी के पहले बिकने वाले, टुकड़ैल, झूठन चाटने वाले, झूठे, धूर्त और मक्कारों की झूठन पर जिन्दगी गुजार देने वाले ऐसे लोगों की संख्या गिनती की हुआ करती थी। आज ये इतने सारे हो गए हैं कि गिनने तक में नहीं आते। ऐसे अनगिनत खुदगर्ज और नंगे-भूखे बुद्धिजीवियों की संख्या हमारे आस-पास से लेकर प्रदेश, देश और दुनिया भर में धींगामस्ती करते हुए आतंकवादी के रूप में नज़र आ रहे हैं।

जिन लोगों को अपनी बुद्धि का इस्तेमाल जीवों और जगत के कल्याण के लिए करना चाहिए, वे अपने स्वार्थों में अंधे होकर हराम का खान-पान करने से लेकर बिना पुरुषार्थ के मुद्रा पाने और जमा करने के षड़यंत्रों में मुँह मारने लगे हैं। जिस मातृभूमि का अन्न, पानी और हवा लेकर शरीर, मन और बुद्धि का निर्माण किया, उसी मातृभूमि के लिए सर्वस्व समर्पण भाव से जीने वाले कितने लोग हैं जिन्हें असली बुद्धिजीवी कहा जा सकता है। इसका ठीक-ठीक जवाब कोई नहीं दे सकता। न सामान्य जन और न ही बुद्धिजीवी कहे जाने वाले लोग। बुद्धिजीवियों के सामाजिक व राष्ट्रीय सरोकार अब कहीं दिखने में नहीं आते, केवल वैयक्तिक स्वार्थ से ही उनका सरोकार रह गया है। बुद्धिजीवियों की स्थिति के बारे में सटीक और निरपेक्ष मूल्यांकन किया जाए तो पता चलेगा कि इसी किस्म में वे लोग हैं जो अपने वजूद को कायम रखने, आदर-सम्मान, प्रतिष्ठा, पद, पुरस्कार और सम्मान, अभिनंदन पाने बड़े लोगों, असामाजिक तत्वों, अपराधियों और आतंककारियोंके पीछे ऐसे घूमते हैं, परिक्रमाएं करते हैं, महिमामण्डन करते हैं जैसे पालतु श्वान अपने मालिकों के आगे-पीछे पुचकारने में लगे रहते हैं या फालतु श्वान पेट भरने के लिए दुम हिलाते हैं। कोई इनकी प्रसिद्धि के लिए झूठा मिथ्यागान कर रहा है, प्रशस्ति ग्रंथ लिख रहा है, भाषण, लेख और प्रोपेगण्डा रच रहा है, कशीदे पढ़ रहा है, कोई इनके इशारों पर बंदर-भालुओं की तरह नाच करते हुए वह सब कुछ करने में मस्त है जो निर्देशित किया जा रहा है। और तो और ये मीडिया के सभी उपलब्ध माध्यमों का अपने हक में तथा समाज तथा देश के विरोध के लिए भयंकर दुरुपयोग में रमे हुए हैं। यानि की अब इन छद्म बुद्धिजीवियों से कुछ भी करा लो, कोई ना-नुकुर नहीं, बड़ी ही प्रसन्नता और सर्वस्व समर्पण भाव से सब कुछ करने-कराने को हर क्षण तैयार हैं। इनके लिए समाज और देश से भी बढ़कर मायने रखते हैं वे लोग जो भौंपों और मदारियों की तर्ज पर इन्हें पालतू जानवरों की तरह नचाते हैं।

आजकल तो हर तरफ बुद्धिजीवियों की बुद्धि, शुचिता, व्यवहार और कर्म पर प्रश्नचिह्न लगते जा रहे हैं। अपनी बुद्धि का उपयोग होना चाहिए समाज और देश के लिए, तभी हमें सही मायने में बुद्धिजीवी कहलाने का हक है अन्यथा धिक्कार है ऐसी बुद्धि को जो देश के काम न आ सके।

डॉ. दीपक आचार्य
वरिष्ठ साहित्यकार, लेखक
लक्ष्मी चौक, बांसवाड़ा

बेटी ने क्यूं परणाई

किये सासरे जार जमाई
झट पट गेले करो लगाई

होटल में कतरा दन खाऊं
हेल गमाऊं खरी कमाई ?

आधी टेम भूख मूं वेटूं
हीरो खावे थाणी जाई

रोटा पोवा री तपती है
परण्या केड़े आफत आई

रोटो मलजा हांज हवेरे
म्हारे फेर जरूरत काई

थां केवो अबके मेलूंलां
मर जावेला जतरे लाई

म्हारो खोज परो जावेला
दादा वणग्या सगळा भाई

न्हीं पोता रो मूंडो देख्यो
उपरे ठेठ परी गी बाई

न्हीं मेलणी वे तो बोलो
बेटी ने थां क्यूँ परणाई

न्हीं तो म्हारी रकमां देई दो
गणो व्याव री पाई पाई

डॉ. गोपाल राजगोपाल
साहित्यकार व चिकित्साधिकारी
गीतांजलि मेडिकल कॉलेज उदयपुर
फरारा, राजसमन्द
मो. 9414342523

नया साल

नया साल
ग़मज़दा दिलों में
खुशियां लौट आए
ये नया साल
कुछ इस तरह आए।

मुड़ कर भी देखे नहीं
बीते हुए कल को
अब जो कल आए
वो बहारे लाए।

जहां में अब ना रहे
गम का कोई नामों निशां
मन गुद गुदगुदाए
और खुशियों के तराने गाए।

बहुत हो चुका है
गरीबों पे सितम
अब न किसी
मजबूर को सताया जाए।

खत्म हो जाए जहां से
नफरत की आंधियां
अब तो कोई फरिश्ता
अमन का पैगाम लाए।

हाथों को काम
और पेट को रोटी मिले
इस साल तो ऐसा
फलसफा निकाला जाए।

इज्जत कई मासूमों की
उजड़ी बहुत उजड़ी
अब तो दरिंदो से
इनको बचाया जाए।

देश के रहनुमाओं को
तहजीब और संजिदगी दे
इस भरी दुनिया में
देश की हंसी न उड़ाई जाए।

अफजल खां अफजल
वरिष्ठ साहित्यकार, कांकरोली

नया साल

ना कर चिंता साथ रहे हैं
धरती - अम्बर पास रहे।
इतना भी क्या गहरे उतरे
सुख-दुख दोनों पास रहे।।

खूब झूलते, सुख के झूले
शीत समीर से आनंदित।
खूब तपी है, दुख की रेती
उष्ण अधीर सी आशंकित।

दुख मत कर सब तेरे जैसे
पवन - अगन भी पास रहे।
इतना भी क्या सकुचाए हो
नदी - नाव तक पास रहे।।

जब रेत तपी, तब दिवस तपा
दिवस तपा तब लोग तपे।

रेत ठिठुरती, रात काँपती
जमी रात तब लोग जमे।

देख दिवस में सूर्य हमारे
गहन निशा में चाँद रहे।
रखे शर्वरी कई सितारे
तो जुगनू भी पास रहे।।

खद्योतों ने कब कम आँका
जान गए जो सीख कही।
मन के हारे, हार कही नित
मन के जीते जीत कही।

काहे हार रहे जीवन फिर
मन तो अपने पास रहे।
जुगनू जीत गए बाजी जो
हार - जीत के साथ रहे।।

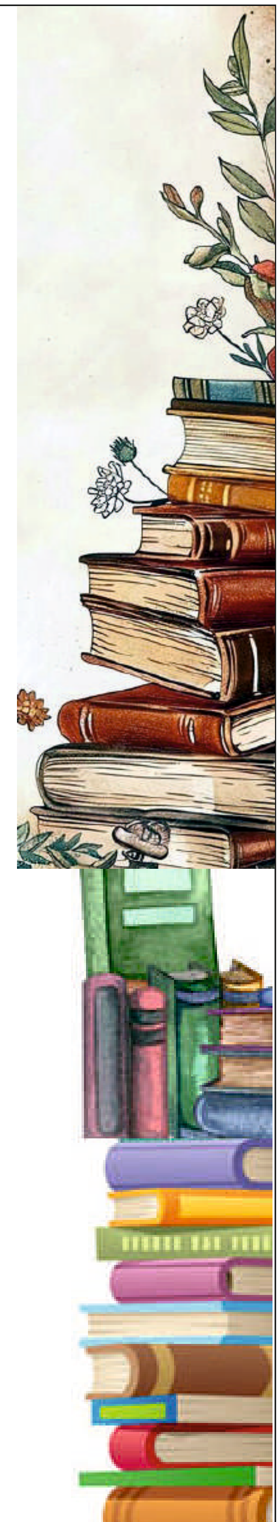

त्रिलोकी मोहन पुरोहि
वरिष्ठ साहित्यकार
कांकरोली, राजसमंद

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

कमला नेहरू अस्पताल के नींव के पत्थर की कहानी

31 अगस्त सन् 1945 में जब भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्व. पंडित जवाहरलाल नेहरू कांकरोली आए, तो यहां के तात्कालिक महाराज श्री की अनुमति व गांव के कईं गणमान्य नागरिकों के साथ मेरे गांव कांकरोली के एक बहुत बड़े उद्यान विट्ठल विलास बाग में कमला नेहरू अस्पताल के नींव के पत्थर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अपने कर कमलों द्वारा रख शिलान्यास किया। 15 अगस्त 1947 को देश अंग्रेजों की हुकुमत से आजाद हो स्वतंत्र हुआ तो नेहरू जी प्रधानमंत्री बने। केन्द्र में भी और राजस्थान में भी उन्हीं की सरकार बनी। पर सन् 1971 तक ना तो अस्पताल बना, ना ही इस ओर किसी का ध्यान गया। इसी दरमियान सन् 1971 में ही एक ऐसी घटना घट गई, जिस घटना ने मुझे ही नहीं पूरे गांव को झकझौर कर रख दिया और मैंने उस समय उस समय घटी घटना को सत्य कथा के रूप में मुर्दा आवाजें शीर्षक से एक कहानी के रूप में पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित करा लोगों तक पहुंचाया, जिसमें मुर्दा बोलता है, पर जिन्दा ईन्सान चुप है। तो लोगों ने अस्पताल के निर्माण के लिए चर्चाएं करना प्रारम्भ किया। स्थानीय नेताओं ने भी सक्रियता के साथ प्रयास किए, पर बात बनती नजर नहीं आई।

मैंने कहानी लिख दी, नेताओं ने धुंआधार भाषण पे, भाषण दे दिए, पर नींव का पत्थर जस का तस रहा। अस्पताल का मुद्दा फिर शीतल न पड़ जाए। अतः सन् 1977 में मैंने फिर एक व्यंग्य आलेख 'हकीम जी मुर्दा जिन्दा करेंगे' उदयपुर से प्रकाशित अरावली नामक पाक्षिक पत्र में छपवाया, जिसमें हकीम जी हमारे स्थानीय नेता और मुर्दा कमला नेहरू अस्पताल की नींव का पत्थर मेरे दोस्त अब्बास के बड़े भाई स्व. श्री सफी हुसैन बोहरा ने अरावली पत्र की 50 कॉपियां खरीदकर गांव के लोगों में निःशुल्क बंटवाई। उसके बाद इस अस्पताल को मूर्त रूप देने का बीड़ा यदि किसी ने उठाया तो वो थे **श्री ईश्वरचन्द्र शर्मा,** जिन्होनें सन् 1980 में जब प्रधानमंत्री स्व. इन्दिरा गांधी कांकरोली आई, तब स्व. डॉ. शम्भूलाल शर्मा व नगर विकास समिति के मंत्री श्री मोहनसिंह जी वर्मा के द्वारा कमला नेहरू अस्पताल के निर्माण हेतु ज्ञापन सौंपा और अस्पताल के निर्माण का रास्ता प्रशस्त हुआ। स्व. हिम्मतलाल हिंगड़ की अध्यक्षता व श्री ईश्वरचन्द्र शर्मा के मंत्रित्व के कुशल नेतृत्व में सन् 1981 से प्रारम्भ हुआ। अस्पताल का काम सन् 1984 में पूर्ण हुआ और कमला नेहरू अस्पताल का भवन राजस्थान सरकार को सुपुर्द कर अस्पताल का संचालन प्रारम्भ हुआ। इस अस्पताल को मूर्त रूप देने में श्री ईश्वरचन्द्र शर्मा ने कईं कठिनाईयों का सामना किया। उन्हेंने अपना तन-मन -धन सब कुछ दांव पर लगा दिया। इस हेतु अभी कुछ ही दिन पहले श्री ईश्वरचन्द्र शर्मा का राजस्थान साहित्यकार परिषद ने नागरिक अभिनंदन किया, जो स्वागत योग्य है। अब मैं आपको वह कहानी बताने जा रहा हूं, जिसमें इस अस्पताल को बनवाने में एक छोटी सी भूमिका निभाई।

मुर्दा आवाज़े

घड़ी ने आठ बजाये तो नैयर ने एक उदास नजर मुझ पर डाल दी। मैं भी कुछ घबरा सा गया और खड़ा हो बरामदे में चक्कर लगाने लगा। कुछ देर बाद कमरे का दरवाजा खुला, नर्स को देख नैयर उस ओर लपका, दबी आवाज में पूछता है- "सिस्टर कुछ हुआ?" उत्तर में नर्स नकारात्मक सिर हिला देती है। कुछ औजार तथा दवाईयां ले नर्स पुनः कमरे में घुस पड़ती है। दरवाजे के बंद होने के साथ ही मेरा हाथ नैयर की

पीठ पर चला जाता है। मैं उसकी पीठ पर सांत्वना और सत्र का दबाव डालता हूं और फिर बरामदे में चक्कर लगाने लगता हूं।

कुछ ही देर बाद दरवाजा फिर खुलता है, नेयर और मैं लगभग साथ-साथ ही दरवाजे तक पहुंचते है। डाक्टर को उदास तथा विचारों में खोया देख में एक अज्ञात भय से कांप सा जाता हूं। तभी डाक्टर कहता है- "मिस्टर नैयर शायद बच्चे को आपरेशन से निकालना पड़े। आप अपनी मिसेज को जितना जल्दी हो सके उदयपुर हास्पीटल में ले जाए।"नैयर बौखला सा जाता है, मैं दीवार का सहारा ले डॉक्टर के नजदीक पहुंचता हूं। डाक्टर मेरी और मुड़ता है और कहता है- "देखिये दर असल बात यह है कि यहां उचित साधन नहीं और फिर जो साधन सुविधाएं जच्चे खाने मेरा मतलब है जनाने होस्पीटल में होते हैं वे भला इस छोटे से प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र में कैसे हो सकते हैं।

ये आप मेरा मुंह क्या ताक रहे हैं, जल्दी से जाइये किसी बस-वस का इन्तजाम कीजिये और जितना जल्दी हो सके इसे उदयपुर ले जाइये । वरना खतरा है।" मैं बिना कुछ बोले बस के इन्तजाम हेतु दौड़ पड़ता हूं। बस लिए अस्पताल पहुंचते ही अस्पताल में दौड़ पड़ता हूं। सामने ही नैयर आंखो में आंसू लिए मिल जाता है। एक धक्का सा लगता है दिल को। फिर भी हिम्मत करके कहता हूं बस का इन्तजाम हो गया, बस दो घंटे की ही तो बात है।"अभी उदयपुर चले चलते हैं, किन्तु सर पीट लेता है नैयर और दहाड़ता है पदमा मर गई। मेरे दोस्त पद्मा मर गई। अगर आज तेरे गांव में जच्चा खाना होता तो एक परदेसी क्लर्क की औरत नहीं मरती। अगर जनाना अस्पताल होता तो मेरी बीबी मुझे यूं रोता छोड़ कर कभी नहीं जाती। मैं बरबाद हो गया दोस्त... अब मुन्नी का क्या होगा? मेरा सारा शरीर सुन्न सा हो गया, मुझे लगा जैसे मेरे पैरों में कई बड़े- बड़े पत्थर जंजीरो से बांध दिए गए हो और मेरे पैर हिल हीं पा रहे हों। बडी मुश्किल से मैंने अपने आप को संभाला और नैयर को सहारा दे अस्पताल के बाहर ले आया। बस वाले ने जब रोना धोना देखा तो बस मोड़ कर चल दिया। रात के करीब 2 बज रहे हैं। मिसेज नैयर के दाह संस्कार से लौट रहा हूं। बार बार डॉक्टर के कहे ये शब्द मेरे मस्तिष्क में एक हलचल सी मचाते हैं- "यहां उचित साधन नहीं हैं। जच्चे खाने में जो साधन सुविधाएं मिल सकती हैं, भला प्राथमिक स्वाथ्य केन्द्र में कहां मिलेगी।" एक झटका सा लगता है मेरे दिमाग को और पद्मा भाभी की सूरत मेरी नजरों के सामने घूम जाती है। मैं सम्भल भी नहीं पाता हूं कि फिर से झकझोर ने लगते हैं नैयर के ये शब्द "अगर तुम्हारे गांव में जच्चा खाना होता, जनाना अस्पताल होता तो मेरी बीबी कभी नहीं मरती।" इस ठण्डी रात में भी मैं अपने को पसीने से तर पाता हूं।

ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। बहुत आश्चर्य की बात है। 3 बज रहे हैं और मैं अब तक घर नहीं पहुँचा ? सब विचारों से ध्यान हटा आस पास नजर दौड़ाता हूँ तो मैं अपने को अपने गांव के उजडे बाग के पास पाता हूं। तभी एक दर्दनाक आवाज सुनाई देती है- "अब कितनी औरतों को और मारोगे, कितनी औरतें अपने बच्चों का मुंह देखे बिना ही दम तोड़ देंगी। अरे! गांव के उद्धारकर्ताओं- मुझे जिन्दा करो, मुझे खड़ा करो, ताकि मैं तुम्हारे गांव की औरतों की सेवा कर सकूं। "एक अजीब भय से मैं कांप गया। मुझे लगा शायद मेरे दिमाग की कमजोरी हैं या फिर मुझे यूं ही लग रहा है कि आवाजें आ रही है। कहीं सपना तो नहीं। पर ऐसा नहीं था। वही आवाजें फिर से आने लगी। मैंने बाग की दीवार के पास खड़े होकर अपनी नजरे बाग में गड़ा दी। आवाज बाग से ही आ रही थी, पर सिवा घोर अन्धकार और सन्नाटे के अलावा मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। हां अलबता बदबू से भरा ह्वा का एक झोंका जरुर मेरे नथूनों से था टकराया ।

अपने को कुछ नियन्त्रित कर मैं अपने घर जाने को आगे बढ़ता हूँ तभी बाग से फिर आवाज आने लगती है- "अब भी मेरा उद्धार करो।" अरे! कितने जश्न और जोश के साथ तुम लोगों ने श्री नेहरु के हाथों मुझे दफन किया था इस आश्वासन के साथ कि "नींव के पत्थर" तुझ पर एक भव्य इमारत बनेगी, पर मुझे तन्हा जमीन में दाब तुम सब बेखबर हो गए। मेरे अंग-अंग को काट- काट कर नीलाम किया और तुम सुख की नींद सोते रहे। मेरे पर गन्दगी के ढेर लगा दिए गए और तुम फूलों के हार पहनते रहे। मेरे सीने पर हल चलाए गए और तुम दूर-दूर से तमाशा देखते रहे। फिर भी मैं वादा करता हूं- मुझे जिन्दा करो, मैं तुम्हारी सन्तानों की रक्षा करूंगा । तुम्हारी गांव की औरतों को मौत के मुंह से बचाऊंगा। "कंपकंपी सी छा रही थी मुझे, इस अदृश्य वाणी को सुन कर।

तभी एक जोरदार हसी के ठहके को सुन चैंक जाता हूं। इतनी रात गए अपने सामने, गांव के पगले गोरख को देख कुछ डर सा- महसूस होता है। तभी पगला गौरख उंची आवाज में बोलता है- "ये भांखे फाड़-फाड़ कर बाग में क्या देख रहे हो बाबू! ये तो कमला नेहरु अस्पताल के नींव का पत्थर चिल्ला रहा है। जब भी कोई औरत बच्चा जनने की तकलीफ से मरती है, तो यह अस्पताल के नींव का पत्थर उस रात यूं ही चिल्लाता रहता है। शायद आज भी कोई औरत जापे से मरी होगी? इसीलिये चिल्ला रहा है। "तभी पद्मा भाभी का चेहरा मेरी नजरों के सामने घूम गया। पगला गोरख कहे जा रहा था- "घर जाकर आराम से सो जाओ, यहां क्या सुनते हो और हां ये बातें जो तुमने यहां सुनी है किसी को कहना मत, बरना इस गांव के लोग तुम्हे भी मुझ सा पागल करार दे देगें।"

मैं गौरख से और कुछ पूछू, कुछ कहूं तब तक पागल गौरख अपने फटे पेन्ट के बटन खोलता हुआ बाग की दीबार को कूद गया। शायद उसे हाजत हो पाई थी।

अफजल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली
मो. 98284-75288

कॉर्पोरेट टैंक में दफ्न लोकतंत्र!

यदि पत्रकारिता लोकतंत्र की जननी है या पत्रकार लोकतंत्र के चौथे स्तंभ हैं, तो यकीन मानिए, 3 जनवरी की रात वह बस्तर के बीजापुर में एक राज्य-पोषित ठेकेदार के सेप्टिक टैंक में दफ्न मिली। लोकतंत्र की इस मौत पर अब आप शोक सभाएं कर सकते हैं, श्रद्धांजलि दे सकते हैं।

जी हां, हम बात उस नौजवान की कर रहे हैं, जिसकी पत्रकारिता उसकी मौत के बाद भी कब्र से खड़ी होकर कांग्रेस-भाजपा को कठघरे में खड़ी कर रही है। हम बात उस **मुकेश चंद्राकर** की कर रहे हैं, जिसे **'इंडियन एक्सप्रेस' ने एक पत्रकार के रूप में ही पहचानने से इंकार** कर दिया। हम बात उस नौजवान पत्रकार की कर रहे हैं, जिसकी मौत ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि पूरी दुनिया में भारत को 'फ्लॉड डेमोक्रेसी' का दर्जा क्यों मिला हुआ है। पूरी दुनिया जब नववर्ष का स्वागत कर रही थी, इस आशा के साथ कि नया साल मानवता के लिए पिछले से कुछ बेहतर और बहुत बेहतर होगा। छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर क्षेत्र के बीजापुर में पूरी खामोशी और योजनाबद्ध तरीके से नर-पिशाचों द्वारा मुकेश चंद्राकर के रूप में लोकतंत्र को सेप्टिक टैंक में दफ्न किया जा रहा था। ये वे नर पिशाच थे, जिन्हें 'दैनिक भास्कर' जैसा कॉरपोरेट मीडिया उनके कुकर्मों पर पर्दा डालने के लिए इस ब्रह्मांड के सबसे बड़े समाजसेवी, सामाजिक क्षेत्र, शिक्षा, उद्यमिता और महिला सशक्तिकरण के प्रणेता के रूप में प्रस्तुत कर रहा था।

मुकेश चंद्राकर की हत्या ने बता दिया है कि क्रोनी कैपिटलिज़्म (परजीवी पूंजीवाद) ने जिस तरह राष्ट्रीय स्तर पर अडानी-अंबानी पैदा किए हैं, उसी तरह उसने स्थानीय स्तर पर भी जिन अडानियों-अंबानियों को पैदा किया है, उनमें से एक सुरेश चंद्राकर है। पत्रकार मुकेश चंद्राकर की हत्या का मुख्य आरोपी वह व्यक्ति है, जिसे कांग्रेस-भाजपा ने बस्तर की लूट को सहज और निर्बाध बनाने के लिए अपनी सत्ता की ताकत का सहारा देकर पैदा किया है। आदिवासी विरोधी और मानवाधिकार विरोधी राज्य-प्रायोजित सलवा जुडूम ने जिन अपराधियों को पाला-पोसा-पनपाया है, सुरेश चंद्राकर उनमें से एक हैं। कुछ महीने पहले बाप्पी रॉय और उसके साथियों को रेत माफियाओं के खिलाफ रिपोर्टिंग करने पर गांजा तस्करी में फंसाने की कोशिश हुई थी। इस मामले में भी हमने पी. विजय जैसे एक और नर पिशाच को देखा था, जो सलवा जुडूम की ही उपज था और इस जुडूम के (खल)नायक एसआरपी कल्लूरी से जिसकी घनिष्ठता किसी से छुपी हुई नहीं है। इसी रेत माफिया ने पत्रकार कमल शुक्ला पर जानलेवा हमला किया था, जिसके वीडियो फुटेज आज भी हवा में तैर रहे हैं। लेकिन किसी हमलावार पर आज तक फैसलाकुन कोई कार्यवाही नहीं हुई। इन अपराधियों के साथ तब के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और कांग्रेस के व्यक्तिगत और सांगठनिक संबंध आज भी कायम है। इन अपराधियों के इसी स्तर के संबंध अब भाजपा से भी बन चुके हैं। पूरे प्रदेश में ये अपराधी आज हत्यारे गिरोह में तब्दील हो चुके हैं। अब क्रोनी कैपिटलिज़्म अडानी-अंबानी पैदा करने वाली एक आर्थिक प्रक्रिया ही नहीं है, एक राजनैतिक प्रक्रिया भी है, जो लोकतंत्र को सेप्टिक टैंक में दफ्न करने की ताकत रखती है।

छत्तीसगढ़ निर्माण के बाद पिछले 24 सालों में बस्तर में कई लाख करोड़ का खेल हो चुका है और यह सब विकास के नाम पर हुआ है। इसलिए 120 करोड़ का सड़क घोटाला कोई मायने नहीं रखता। बस्तर के विकास के लिए केंद्र से लेकर राज्य तक (चाहे किसी भी जगह सरकार कांग्रेस की रही हो या भाजपा की) और राजनेता से लेकर अधिकारी और ठेकेदार तक कमर कसे हुए हैं। बस्तर के विकास के लिए 6-लेनी सड़क चाहिए और सड़क बनाने के लिए फोर्स चाहिए। बस्तर के विकास के लिए नक्सल उन्मूलन की जरूरत है और इसके लिए फोर्स चाहिए। बस्तर के विकास के लिए संसाधनों का दोहन जरूरी है, इसके लिए कॉर्पोरेट चाहिए और इसके लिए भी फोर्स चाहिए। लेकिन बस्तर के विकास के लिए आदिवासी नहीं चाहिए, उनके लिए हॉस्पिटल, स्कूल, आंगनबाड़ी नहीं चाहिए। यदि विकास के नाम पर इन सबकी, दिखावे के लिए ही सही, कभी-कभार चिंता जताई जाएं, तो इसके लिए भी फोर्स चाहिए। सोशल मीडिया में अपनी टिप्पणी में पत्रकार सौमित्र रॉय ने ठीक ही लिखा है -- 'यह भयानक विकास है। अपराधियों की सत्ता का विकास। संघियों का विकास। सत्ता को तेल लगाने वालों का विकास और गरीब आदिवासियों की हक की बात करने वालों का विनाश।' 'कॉर्पोरेट बस्तर' की यही सच्चाई है। इसी सच्चाई को अपनी त्वरित टिप्पणी में माकपा नेता बादल सरोज ने कुछ यूं बयान किया है -- 'बस्तर सचमुच में एक जंक्शन बना हुआ है ; एक ऐसा जंक्शन जहां के सारे मार्ग बंद हैं : माओवाद का हौवा दिखाकर लोकतंत्र की तरफ जाने वाला रास्ता ब्लॉक किया जा चुका है। कानून के राज की तरफ जाने वाली पटरियां उखाड़ी जा चुकी हैं। संविधान नाम की चिड़िया बस्तर से खदेड़ी जा चुकी है। अब सिर्फ एक तरफ की लाइन चालू है : आदिवासियों की लूट, उन पर अत्याचार, सरकारी संपदा की लूट और उसके खिलाफ आवाज उठाने वालों का क़त्ल करने की छूट।"

यही सच्चाई है, जिसे कांग्रेस-भाजपा दोनों मिलकर दबाना-छुपाना चाहते हैं। मुकेश की हत्या के बाद कांग्रेस-भाजपा एक-दूसरे पर जो आरोप-प्रत्यारोप लगा रही है, वह इसी मुहिम का हिस्सा है। वरना कौन नहीं जानता कि जो ठेकेदार कल तक तिरंगा लपेटे थे, आज वे भगवा धारण किए हुए हैं। कांग्रेस या भाजपा का होने या न होने का एक झीना-सा अंतर जो बचा हुआ था, वह भी सलवा जुडूम के दौर में खत्म हो गया था। महेंद्र कर्मा तब के भाजपा मंत्रिमंडल के 16वें मंत्री ठीक उसी प्रकार गिने जाते थे, जिस प्रकार बृजमोहन अग्रवाल कांग्रेस मंत्रिमंडल के 16वें मंत्री गिने जाते थे। अब हर खादी के नीचे खाकी है। कुछ अपवाद जरूर है और वे सम्मान के योग्य तो हैं ही, लेकिन उनके पास सत्ता की ताकत नहीं है।

खादी के नीचे की यही खाकी है, जो इस सवाल को पूछने से रोकती है कि गंगालूर से लेकर मिरतुर तक जो सड़क बनाई गई थी, वह थी किसके लिए? आदिवासियों के लिए या कॉरपोरेटों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों की लूट को ढोने के लिए? इस सड़क को बनाने का अनुबंध 16 टुकड़ों में बांटा गया था, फिर भी सभी टुकड़े सुरेश चंद्राकर की जेब में ही क्यों पहुंचे? जब एक किमी. सड़क निर्माण की औसत लागत लगभग एक करोड़ रुपए आती है, तो इस सड़क की लागत 56 करोड़ से बढ़कर 120 करोड़ कैसे और किनकी कृपा से हो गई? सड़क बनने से पहले ही पूरी राशि का भुगतान हो गया, तो इस 120 करोड़ के कितने टुकड़े हुए और किस-किसकी जेब में पहुंचे? जब एक सड़क के लिए पानी की तरह पैसे बह रहे हैं, तो सड़क को भी पहली ही बारिश में बहना ही था। इसमें किसी ठेकेदार का दोष कैसे हो सकता है! लेकिन यह सवाल तो पूछा ही जाना चाहिए कि इस हत्यारे ठेकेदार को तीन सशस्त्र जवानों का सुरक्षा चक्र क्यों और कैसे उपलब्ध कराया गया है? क्या यह सुरक्षा चक्र पत्रकारों की हत्या करने और लोकतंत्र को सेप्टिक टैंक में दफनाने के पुनीत कार्य के लिए दिया गया है?

सलवा जुडूम ने समाज के अंदर अपराधियों की फौज को तैयार किया है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा इसे प्रतिबंधित करने के बाद भी आज भी यह अलग अलग रूपों में यह चल रहा है। सलवा जुडूम में जो एसपीओ बनाए गए थे, वे सभी पूर्व-नक्सली थे या नक्सली गतिविधियों से उनका घनिष्ठ संबंध रहा है। सलवा जुडूम ने नक्सलियों से जुड़े असामाजिक तत्वों द्वारा लूटपाट के अवैध कामों को वैधता देने का काम भी किया है। सुरेश चंद्राकर भी एसपीओ था और यह तय है कि आज भी नक्सलियों से उसके संबंध हैं। बस्तर के अंदरूनी क्षेत्रों में इस संबंध के बिना कथित विकास का कोई काम नहीं हो सकता। यह भूतपूर्व नक्सली और वर्तमान सलवा जुडूम की अवैध संतान आज पूरे बस्तर को रौंदने की ताकत रखता है, तो कांग्रेस और भाजपा दोनों अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकती।

यह आम चर्चा है कि बस्तर में सामने ठेकेदार होता है, पीछे कोई अधिकारी या राजनेता होता है। तो जिस सरकार और उसके प्रशासन को इस भ्रष्टाचार को नियंत्रित करना था, वही इस भ्रष्टाचार का जनक है। क्रोनी कैपिटलिज्म में सरकार नाम की केवल छाया रह जाती है, जो जनता को भरमाती रहती है। असल नियंता, असल सूत्रधार तो सुरेश चंद्राकर जैसे हत्यारों के गिरोह होते हैं, जो आदिवासियों पर गोलियां भी बरसाते हैं, उनके घर-गांव जलाते हैं, बलात्कार करते हैं, मासूमों को जेल भी भेजते हैं और इसके खिलाफ उठने वाली हर लोकतांत्रिक आवाज को सेप्टिक टैंक में दफनाने की बर्बरता भी दिखाते हैं, क्योंकि सत्ता, कॉरपोरेट पूंजी की गुलाम बन जाती है और पूरे तंत्र को अपने हाथों में नचाने की ताकत समेट लेती है।

सबको मालूम है कि बीजापुर के एसपी (पुलिस अधीक्षक) का सुरेश चंद्राकर से क्या संबंध है और हर किसी को यह लग रहा है कि मुकेश की हत्या के तार उससे भी जुड़े हैं, क्योंकि जिस सड़क घोटाले को मुकेश ने उजागर किया है, उस ठेके में सुरेश चंद्राकर का ही नहीं, बीजापुर के एसपी सहित कई नेताओं-अधिकारियों के हित जुड़े हैं। नक्सल इलाकों में हर निर्माण कार्य की देखरेख जिला प्रशासन द्वारा की जाती है। ऐसे में महीनों और सालों तक चलने वाले सड़क निर्माण के काम में गिट्टी की जगह बिछाई जाने वाली मिट्टी किसी भी जिम्मेदार की नजर में कैसे नहीं आई? अब इस घोटाले से प्रशासन के अधिकारी कैसे बरी हो सकते हैं? क्या इनमें से किसी भी घोटालेबाज को सरकार नामक संस्था ने आज तक छुआ है? पुलिस द्वारा सेप्टिक टैंक की खुदाई में आनाकानी करना अकारण नहीं था। गुमशुदगी की रिपोर्ट के बाद भी एसपी और पुलिस की निष्क्रियता अकारण नहीं थी। नर पिशाच सुरेश चंद्राकर का पुलिस की नाक के नीचे से आसानी से फरार होना क्या बताता है?

इस मामले में भाजपा सरकार द्वारा एसआईटी के गठन का मतलब है, हत्यारों को बचाने के लिए मामले को ही कमजोर करना। एक ऐसी ही एसआईटी तब गठित हुई थी, जब भाजपा के सत्ता में आते ही संघी गिरोह से जुड़े गौ-गुंडों ने उत्तरप्रदेश से आए तीन मुस्लिम पशुपालकों की आरंग के पास महानदी पुल पर हत्या कर दी थी। बाद में इस एसआईटी ने, सरकार के स्पष्ट इशारे पर, हास्यास्पद निष्कर्ष पेश किया था कि तीनों ने आत्महत्या की है। गौ-गुंडों को बरी कर दिया गया था। फिर इस एसआईटी से क्या उम्मीद की जा सकती है?

मुकेश हत्याकांड के बाद पुलिस अधीक्षक का बयान है -- 'सुरेश चंद्राकर जगदलपुर में था, जब उसे इस घटना की जानकारी दी गई।' इस हत्याकांड के मुख्य आरोपी के बारे में कितने मासूम हैं बेचारे एसपी! पत्रकार सुरेश महापात्र ने ठीक ही सवाल किया है : 'मुकेश की हत्या के मुख्य साजिशकर्ता के बारे में पुलिस का यह बयान क्या साबित करता है?' तो इस एसपी के बारे में, जिसकी गतिविधियां बताती है कि इस हत्या में उसका भी हाथ हो सकता है, एएसपी की एसआईटी क्या कर लेगी? क्या यह एसआईटी बीजापुर एसपी की कारगुज़ारियों को उजागर करेगी? इसलिए एक निष्पक्ष जांच की जरूरत है, जो इस पूरे माफिया गिरोह और उनके राजनैतिक आकाओं को बेनकाब करें। ऐसी जांच सीबीआई या हाई कोर्ट की निगरानी में ही हो सकती है। लेकिन ऐसी जांच का साहस किसी कॉर्पोरेटपरस्त सरकार में कैसे हो सकता है?

मुकेश चंद्राकर तंत्र की इसी पाशविकता के खिलाफ लड़ रहे थे। उसने हमेशा बस्तर में माओवादियों को कुचलने के नाम पर फर्जी मामलों में आदिवासियों की गिरफ्तारियों से लेकर फर्जी मुठभेड़ तक के मामलों को, आदिवासियों के मानवाधिकारों के मुद्दों को और प्रदेश की प्राकृतिक संपदा को कॉरपोरेटों को सौंपे जाने के लिए की जा रही साजिशों को प्रमुखता से उठाया था। उसकी पत्रकारिता में राजनीति का वह पक्ष था, जो आम जनता के अधिकारों, उसके संघर्षों, उसके दुख-दर्दों, उसकी आशा-आकांक्षाओं को उकेरता था। उसकी रिपोर्टिंग में बस्तर की संस्कृति और उसका जन जीवन गतिमान दृश्य की तरह सामने आते है। बादल सरोज के शब्दों में कहें, तो वह एक साथ अपने लिए और अपने साथियों के लिए खाना रांध सकते थे और अपने लैपटॉप पर बैठकर दिन भर की खबरों को पका सकते थे। रांधने और पकाने की कला में बहुत कम पत्रकार सिद्धहस्त होते हैं। यह कला मुकेश में थी, जिसे उन्होंने आदिवासी दूरस्थ अंचलों में उनकी झोपड़ियों में सोकर, नक्सली कैंपों में रातें बिताकर, साप्ताहिक ग्रामीण बाजारों में आदिवासियों से बतियाकर हासिल की थी। इसलिए उनकी रिपोर्टिंग उनके रांधे खाने की तरह दिमाग के लिए सुपाच्य और स्वादिष्ट होती थी। वे पुल थे नक्सलियों और प्रशासन के बीच, जिस पर आदिवासी जनता सहजता से चहलकदमी कर लेती थी। वे आदिवासियों पर विश्वास करते थे, आदिवासी उन पर विश्वास करते थे। यही उसे अपनी पत्रकारिता के लिए आत्मबल देता था। यदि मुकेश जैसे छोटे भाई और कमल शुक्ला जैसे आत्मीय मित्र नहीं होते, तो सिलगेर सहित बस्तर के अंदरूनी इलाकों में मेरा जाना, वहां के संघर्षरत आदिवासियों से अनेकों बार मिलना संभव नहीं होता। यह मुकेश की खूबी थी और कमल का साहस कि हमारी पहचान संघर्षों की जगहों पर पहुंचकर ही प्रशासन के लिए उजागर हो पाती है। इस समय भी, जब मैं यह आलेख लिख रहा हूं, कमल शुक्ला मेरी सूचनाओं का भरोसेमंद स्रोत हैं और किसी ट्रक में बैठकर यात्रा कर रहे हैं।

जिस सरकार का काम है पत्रकारों को सुरक्षा देना, उस सरकार का सुरक्षा चक्र यदि हत्यारों के पास में है, तो हम अंदाजा लगा सकते हैं कि हमारे देश और छत्तीसगढ़ में लोकतंत्र की स्थिति कितनी बदतर है। छत्तीसगढ़ निर्माण के 24 साल बाद भी पत्रकारों की सुरक्षा के लिए कांग्रेस-भाजपा एक प्रभावशाली कानून बनाने और उसे लागू करने में विफल रही है, तो इसलिए कि न तो कांग्रेस की, और न ही भाजपा की पत्रकारों को सुरक्षा देने में कोई दिलचस्पी रही है। एक विपक्षी पार्टी के रूप में उन्होंने केवल पत्रकारों को भरमाने का और सत्ता में चढ़कर गोदी-भोंपू मीडिया पनपाने ही काम किया है। यही कारण है कि छत्तीसगढ़ में पत्रकारों पर हमले लगातार बढ़ रहे हैं।

'कमेटी टू प्रोटेक्ट जर्नलिस्ट' के अनुसार, 2005-24 के बीच जिन देशों में सबसे ज्यादा पत्रकार मारे गए हैं, उनमें भारत का स्थान 7वां है। 2014 से अब तक हमारे देश में 28 पत्रकार मारे गए हैं। 2025 में हत्यारों का पहला शिकार मुकेश चंद्राकर बना। न्यूयॉर्क स्थित एक संगठन की रिपोर्ट बताती है कि भारत में मई 2019 से अगस्त 2021 तक मोदी राज के 28 महीनों में पत्रकारों पर 256 हमले हुए हैं, याने हर महीने 9 से ज्यादा और हर तीन दिनों में कम से कम एक। पिछले 10 सालों में 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' के पैमाने पर भारत 35 अंक नीचे गिर चुका है और आज वैश्विक प्रेस सूचकांक में हमारा स्थान 180 देशों में 142वें से फिसलकर 159वें पर आ गया है।

अमेरिकी रिपोर्टर वाल्टर लीलैंड के अनुसार : 'स्वतंत्र पत्रकारिता लोकतंत्र की पहली शर्त है। बिना इसके सिर्फ किताबी लोकतंत्र बनाए जाते हैं, जो अक्सर चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा मिटा दिए जाते हैं और लोकतंत्र बस नाम के रूप में ही बच जाता है।' भारत में स्वतंत्र पत्रकारिता की जगह अब उस कॉरपोरेट मीडिया ने ले ली है, जिसे अक्सर गोदी मीडिया के रूप में पहचाना जाता है। सलवा जुडूम और क्रोनी कैपिटलिज्म के जरिए जिस कॉर्पोरेट बस्तर को विकसित करने की कोशिश की जा रही है, वह लोकतंत्र को सेप्टिक टैंक में दफनाकर ही पनप सकता है, लेकिन बस्तर की जन पक्षधर पत्रकारिता और उसकी रंग-बिरंगी छवियां मुकेश-युकेश भाईयों, कमल शुक्ला, बाप्पी रॉय, रितेश पांडे, रानू तिवारी, मालिनी सुब्रमण्यम आदि से मिलकर बनती है, जिसे कुचलकर नहीं मारा जा सकता। मुकेश की हत्या के बाद भी उसकी पत्रकारिता कॉर्पोरेट तंत्र, उसकी मीडिया और नर-पिशाचों के सामने तनकर खड़ी है।

नोट : लेखक के अपने विचार है।

संजय पराते

लेखक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा उपाध्यक्ष हैं

मो. 94242-31650

आल इज वेल बोलावो

वरदी वाळा री नोकरी घणी आकरी वे। रूतबो अश्यो के एक धाकळ में मरद हमझवा वाळो मनख बी जांग्यो भरी देवे। काई गामड़ा न काई सैर। नत दन मारा कूटो न ऊंदो हूदो काम जणी री रिपोर्ट लिखणी, बियान लेणा, उधमियां न हत्यारा ने पकड़णा, कसेड़ी में पेस करणा न रिमांड लेणा जश्या काम लागा ई रेवे। दंगो वे तो हाथ पग तोड़णा न तोड़ावणा बी पड़ै।

वे होळी दिवाळी, ईद मोहर्रम, कोई तेवार नी मनाई सके। तेवार पे ओ अणा री डबल पेसल डूटी लागे। होळी रमणी वे तो दूजे दन। रमवा वाळा बी वणा रे मेखमा रा सपाई। दूजा ने कठे टेम के दो दन तक रमे। घर रा सब जणा तेवार मनावे न ये दन रैण काम करे न सैर में सांती रो परबंद करे। फेर बी तरकूट नी माने। नेम हंसल्या नी रेवे। काई बी उतमधड़ा करिया वना नी रेवे, न वरदी वाळा रे वास्ते आगाऊं आग मुसकलां त्यार राखे। काई भी ऊंच नीच वे तो जनता न जनता रा हाकम दोई आधा रोटा पे दाळ लेइन कारवाई ने त्यार।

मोबाइल बी अणां रो दसमण। फोरी मोटी कारवाई कीदी के कंडेई गिरफ्तार कीदो ने आगलो फोन मलाइन केवे, लो पेली काकाजी ऊं वात करी लो। पछे कारवाई करजो। कदी हास झूंठ बोलावा हारू निरदोसां रे डांडया मेलणा पड़े तो कदी मुळजिमां ने सिफारिस पे छोड़णा पड़े। आजकाला तो कार्रवाइ री सौ गणती पूरी कीधा केड़े बी एक दो ऊं पाछा गणना पड़े।

पुलीस वाळा रे बी घर बार है। हगाई हगपण, मौत मरगत, हामेळो परसादी वणा रे परवार में भी चालतो रेवे। पण अश्या मौका पे बी वणा रे छुट्टीऊं काम नी। कदी कदी माथा में टेणसण वळी जावे जो घणी मुसकल ऊं निकले।

केई पुलिस वाळा उपाव जाणे जणीऊं टेणसण परी जावे। ये उपाव है 'होट' न 'सीटी'। जणी दाण ये होट घुमावा लागे न सीटी वजावा लागे तो पछे देखो रंग। कुण केवे के वियाव भूंडो? आछा आछा ने पाछै हरकणो पड़े, अबे हाड़का खोळा मती करो थाणादार सा। थां केवो जो सब सही। मूं हमझी गियो। आल इज वेल...।

डॉ. गोपाल राजगोपाल
वरिष्ठ साहित्यकार
वरिष्ठ प्रोफेसर गीतांजलि मेडिकल
कॉलेज, उदयपुर, मूलतः फरारा, राजसमंद

ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498-13798, 79767-52935
फैक्ट्री चौराहा, बस स्टैंड, गांवगुड़ा, खमनोर, मो. 90240-34696

चेन की नींद जो सो न सके

पाप अपने गंगा में नहा कर भी धो ना सके
बहुत से लोग घुटते रहे मगर खुल के रो ना सके
रहम की नज़र उन पर करना मेरे मालिक
ग़मों के बिस्तर पर चैंन की नींद जो सो ना सके
रिश्तों की भीड़ में वो ही अक्सर टूटे है
अपने बेज़ा अहम में किसी के जो हो ना सके
उनके ही दिल की बस्तियां उझड़ी हुई रही
किसी के ख़्वाब ओ ख़याल में जो खो ना सके
बंजर जमीं सी उनकी हो गई है ज़िन्दगी
नेकी का बीज जो किसी के हक़ में बो ना सके
उनके ही नसीब में आया है अंधेरा 'दीक्षित जी"
ख़ुद चराग़ बन कर के जो जला लौ ना सके

सूर्यप्रकाश दीक्षित
साहित्यकार व कवि
काव्य गोष्ठी मंच, राजसमंद

vedanta
transforming for good

HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India

हिन्दुस्तान ज़िंक की ओर से
गणतंत्र दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

हिन्दुस्तान ज़िंक
भारत का गौरव।
विश्व में सर्वश्रेष्ठ

- हिन्दुस्तान ज़िंक में, हम केवल धातुओं का उत्पादन नहीं करते – हम संभावनाएं सृजित करते हैं
- लगातार दो वर्षों से, S&P ग्लोबल CSA में विश्व में नंबर 1*
- ईकोजेन का उत्पादन – एशिया का पहला कम कार्बन 'ग्रीन' ज़िंक
- स्वच्छ और उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला, ज़िंक और सिल्वर जैसी महत्वपूर्ण धातुओं का निर्माण
- हिन्दुस्तान ज़िंक एनर्जी ट्रांजिशन के केंद्र में भारत का नेतृत्व कर विश्व को प्रेरित कर रहा है

*मेटल्स एंड माइनिंग सेक्टर में

Hindustan Zinc, Yashad Bhawan, Udaipur - 313 004, Rajasthan, India | +91 294-6604000-02 | CIN L27204RJ1966PLC001208 | www.hzlindia.com | infohzl@vedanta.co.in
https://www.linkedin.com/company/hindustanzinc/ https://www.facebook.com/HindustanZinc/ https://twitter.com/Hindustan_Zinc https://www.instagram.com/hindustanzinc

जयवर्द्धन NEWS

जयवर्द्धन

C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स, द्वितीय मंजिल,
सौ फीट रोड, राजसमंद मो. 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews jaivardhannews.com liverajsamand जयवर्द्धन